

DPN 6294

Title : गङ्गाधरी टीका GANĠĀDHARĪ TĪKĀ

Run. No. 6985

Cat. No. 24

Micro. No.

Subject Comment

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 22.5 X 7

Folios 36

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator गंगाधर शर्मा

Date: NS / SS / VS / KS 823

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ नत्वा सरस्वतीं देवीं स्वल्पापुत्रोत्तरावती ॥ क्रियते ह्यधिपायेन
श्री गणपति शक्तिरा ॥ श्री हरिपति पौत्रेण कृतज्ञापति स्तुता ॥

4 इति श्री गङ्गाधर शर्माणा विरचिता गङ्गाधरी टीका समाप्ता ॥ ॥ शुभमस्तु
सर्वलोकानां ॥

सम्बत् ८२३ भाद्रपद मासे शुद्धपक्षे प्रतिपत्तिथौ बुधवारे तस्मिन्दिने
स्वातिम्ब वन्तागृह निवासितो विप्र कुलोद्भवः श्रीगरापति शर्माणाः पुत्र
श्री देवशंकर शर्माभ्यं गङ्गाधरी टीका मन्त्रीलिखत् ॥ ॥ शुभम् ॥

5

गङ्गायत्री टीका

ॐ श्रीगालयनमः॥ नत्वा सत्रस्वर्गादधी. स्वल्यायु. (श्रुतावली. क्रियतेत्यधि
 यानेन. श्रीगालयनिःशर्मला॥ श्रीदेवियनिःशुल. कमलायनिसूनना. यद्विनी
 तनयनेषा. विनादकत्रलायसा॥ मंगलं कंराज. (द्रोत्री. किमाहोतगजाननं।
 कंराजीराजगरा. उनुकूलाय किंयदं॥ अथुतजगति॥ यत्राशमवृद्धिनु
 किंसमीत्र. संवाधनेकानुमनाविकात्र॥ संवाधने किंशुवाचकस्य. रालंमह
 शस्यनुक॥ सुतक॥ संवाधने किंनुत्रियाहंशु. नानाधरावाहसहयहात्र॥

असुसमसुजाति॥ किमाश्रानिःशखीवसक्तविनाशं. किमनीश्वरकि
 नृत्तसुर्गकं. लशब्दीप्रसन्नानुसन्नाकिमिक्त. स्वकं (शिवधू॥ किंदधति
 वृत्तिवि॥ दमनकूलं॥ असुसमसुजाति॥ कवसकिसदामीना. राउसं
 वाधनेचकिं. युष्मादावदूवाचकिं. कालक्री (शमनुकशिव॥ असुसमसु
 जाति॥ कृत्वायावदकिंनुकाहप्रिवधूर्द्धाभा॥ यत्राकृन्वत॥ किंस्यादा
 श्रुतिस्वर्गदानत्रयनिःकंसिद्धिकात्रीनुक॥ शशुलरायदस्य किंमूत्र

15
 10
 5
 10
 15
 20

प्रिया प्रसन्नसंवाधनं सर्वज्ञो गिरिजासुगमवद किं कामस्य वद ४ युनः ॥
 कुमार ॥ द्विर्वेसुहीयमाना कप्रजा निः ॥ सर्वज्ञो व प्रलस्य किं वद सखे नैव ॥
 क किं यदं का विष्णुर्दयितानु कान नू सखी की दृक्कम (धनं नः ॥ की दृक्का व
 दत्री न सं न नृय निजो यी द्विज ४ की दृक्का ४ काले को व का प्रिले सु न ग ८ ३
 की दृक्कम (धनं नू क ॥ वनमाली ॥ अरुहीयमाना कप्रसम सुजा निः ॥ कन
 दिवो क सु ४ सखे यालिगा मिदं लथ । वर्यो सुयू प्रिगा कन वा प्रिले सु क

5
 10
 15
 20

लामही ॥ दवरा ऊन ॥ द्विः सम सुजा निः ॥ की दृक्का ४ कानूय कानां रुलानां
 स्मादिना ॥ क ४ गगनं स्वकया यागी । धनं (धनं व द की दृक्का ४ ॥ विमानं ग ४ ॥
 शयनं दकजा निः ॥ न नू द वा प्रिय ४ क ४ स्मा । द्विहा प्रवा कु का व द । व स न
 समथं चात्रो त्रैतिक ४ यं च मस्वर्ज ॥ का किल ४ वद्वमाना कप्रजा निः ॥ जू
 दोर्कं मनुजानमन्दिद द ग य ल्पार्थि ला कानूका । यूयं वृत्त च व र्ज व ल्प
 मयि किं भव किं किं निजं ग ४ काले के न नू वा प्रिगा व द सि किं प्र (रा जि

शिर्षोक्तिर्ग. लाका न्दवयुर्नचिर्ननयनि किं ह्यता नूहिर्गंगजलं ॥ अना रुः
 प्रयसु द्विर्गसु समसु जानि ॥ कृष्ण (अद्वय गंगे सदा मधु त्रिय ॥ कां कूर्म प्रयी
 सखे. स वृद्धो गजि ॥ शिव प्रसन्न वद किं कस्मिन् प्रथानय ॥ नेथ (अव द किं य
 दं च स प्रसाद वस्य स वाधन वृत्त ॥ क न नि ह न्य ग स व द न क ने व (गारा ४
 करं ॥ कृष्ण लं न ॥ अरु द्विर्गसु समसु जानि ॥ क क या. ३ ४ खि ता ४। स्युर्नेत्रा ४
 या वृ वि ॥ अयूरु प्रजानि ॥ अ का न लि प्रभा नू किं य शु य ग ४ स वाधन कि

४

यून ४ स वृद्धो वद व जि (ला न नू सख किं स्या ऊ न चो कु क ४। कारी भा नू ग जा
 न ना वद सखे क ४ का ज य भा न नू. सर्व विश्व मिदं सखे क म ल ज ४ क ४ सु हि
 का गी वद ॥ म (अरु प्रयसु दी य मा ना क प्र स म सु जानि ॥ स वृद्धो व नू ल
 स किं वद यदं विष्णु ४ यून ४ किं यदं. वे क ल्या न नू किं यदं य शु य ग ४ स वा
 धन किं यदं। स ग गं सु सखे न कृ य कृ नू ग का या द सां ना य क. ओ य भ्र व
 द किं यदं नू ग जिन ४ स वाधन किं रा व नू ॥ लून ४ स्या त्स समा प्र (रा व नि

कायश्च दृष्टा ४ किं यदं नेष (अथ द किं यदं राव निशा दागानूक सिद्ध दाग
 लको वद सवाक राव नि किं स वाध न सुन्द प्र. क ४ (अथ) उ व न य ग य ग म
 न का वा त्रि द या वृष ४ स वृद्धो व द किं यदं राव नि किं रा व स म ना त्य दं वृद्धि
 त्वं नू व हो विर कि त्र वि का य शु ४ सु ग ४ का दि न ४ ॥ १५ ॥ न ४ स्या द द की द (१)
 न त्र ज न ४ क सि न त्र ४ का य वा न. को ना मा व द रु मि थ गि त्रि यु वा ना थ ४ स
 श्व का व द ॥ १६ ॥ स वा ध न किं स्या. डा ग दा उ रु थ व द। श्व द व किं यदं धा

५

थया वा. विकल्प ४ वा स्या द्वि क ल्या य म था त्रि ति वि श्व ४ दिन य ग ४ सूर्य स्य स वा ध न
 किं यदं। हं न न हं सूर्यो। न ४ सूर्य नृ थ य रा वि ति वि श्व ४ मी ना ४ म क्का ४ कृ ग. क
 सि नि ष्टं य थ ग। क. ज ला। सु ख जी र्थ ज लं य क मि ति का वा क न ॥ उ यून ४ शु रा स्य
 क ल्या ल स्या रि मू र्थ अ थ स वा ध न किं। हं न हं शु रा ॥ गा या धि ना थ ४ गा या ना ज
 ला ना म धि ना थ ४ अ धि य नि ४ अ थ दि ति य दं नू द. क. कृ ग। कृ द कृ ग कं नृ नि ॥ क
 व नृ ल. व नृ ल मु ज ला धि य त्वा न् ॥ न नू द ने ष (अ. नि ष य त्वे किं। न. वृ नि ॥ म धू

मूत्रगलः मयू मूत्रदेह्यसेन्यः कनयनाः नखः कृशः कण्वः विष्णुना ॥ वहिर्ना
 यिकायां दीना द्रव्यसु समस्तजा ॥ अणुकायादीना कर्तव्यं यथः ॥ वहिर्ना
 यिकायां दिव्यसु समस्तजातिमाह ॥ किमाश्रयति ॥ वसन्तवसन्तकालः ॥ ख
 दः ॥ किमाश्रयति ॥ दलः यणः ॥ अणुदिव्यसु यदः ॥

किल ४ मयूरा नृपतिः तर्हर्त कूर्चनिः कंता मद्यता दनः च न शब्दतः गर्जुनन
 गिया वत ॥ ॥ दक्षिणस्यामिति ॥ धर्मराज ॐ तिय दन द्वि ४ समस्त जात्युरु तत्व मा
 ह ॥ दक्षिणस्यां दिशः यां दक्षिणदिशि दलु धात्रका दलु धात्री दिग्याल ४ क ४ धः
 मर्मराजा यम ४ धर्मराज ४ यि नृ यति त्रिपु मत्र ४ ॥ कूर्चत्रीर्णः कूर्चवर्षा श गूर्ध्नी री
 मादीर्ता च कुर्ध्नी री मार्कून न कूल सह दवा तां आदिज ४ अग्रज ४ क ४ धर्मरा
 जा युधिष्ठिर ४ ॥ श्वेदक ॐ ति ॥ ॐ रा ॐ तिय दन वस्तु द्वि ४ समस्त जात्युरु तत्व

१२

माह ॥ श्वेदक इष्वका वृद्धि ॥ ॐ इष्व ४ न नूह सखः मयूकत्र ४ यद्यद ४ क ४ रा ४ यमत्र
 ४ यमत्रा ४ युकीर्ति ॥ ॐ यका द्रवका ४ ॥ लोकं तिलाकला वल्य गृयी सून्यत्र नू य
 धात्री क ४ ॐ रा ४ ॐ ४ कामस्तु यव रा कानि श्रमस्त ॐ रा ४ काम कान्ति ४ ॥ त्विज्ञा रा
 श्रुविश्रुति दीय य ॐ यमत्र ४ ॥ ॐ नुवाहन ४ कावद ॥ ॐ रा गजा १ धाये रावत ४ ॥
 कस्मिन्निति ॥ शेत्रव ॐ तिय दन द्वि ४ समस्त हीना द्रवजा ति द्विर्ध्रस्तु जात्युरु तत्व
 माह ॥ रायानर्क रायं कर्त्र कस्मिन् वृद्धि ॥ शेत्रव राय ॥ ॥ शेत्रव राय ॥ राय ॥ ॐ ति

दिग्धशा रूयेऽरूयलेविषधयेऽसूये नूदक कस्मिन् सुष्मरा उल्कसूष्मरा
 युगं शेरव महादव ॥ शेरवरीय (रा) म्नें निविश्वे ॥ नूद सवि उ ॥ सूयम
 सवुद्धो किं ॥ ह्रवः ह्रसूय ॥ गयतस्मविगात्रवित्रियमत्र ॥ ननूदसख निनाद २०
 शेरव कस्मिन् कुग वद ॥ वः शय ॥ नूद खग ॥ यदिक ॥ आका न आमनु (रा)
 किं रावति ॥ ह्रवः ह्रयदिन ॥ विविक्कित्रयगय यं एमत्र ॥ चयूनस्मायाधि
 नाथ ॥ जलाधिनाथ ॥ क केस्मिन् ॥ वः वः (रा) ॥ कान्ति ॥ का (रा) ॥ सु ॥ य

रात्रयुचिस्त्रिंश ॥ एमत्र ॥ नूद विगात्र निर्मनूये ॥ सविग ॥ युजिग ॥ क कुग
 ॥ अविष्कूस्मिन् न विष्कू ॥ रा ॥ अगु ॥ नेने ॥ निमूगलरो सिद्धयदं ॥ अगु रि
 मुख अग्निर्माधन किं ॥ ह्रवः ह्रवः ॥ उयमाग ॥ उयमाया ययूनो ॥ सूख ॥ इ
 श्वकिं ॥ वा ॥ वा उयमा ॥ वा इश्व ॥ वा ॥ अगु अ ॥ सुगलव ॥ उयमा इश्व ॥
 वास्माद्विकल्यायमथात्रिनिकाय ॥ ॥ विषादनूकम्यायामित्यवयकाय ॥ ॥
 आदीनि ॥ नीलकण्ठयदा रुप्रलदि ॥ समरुजागित्वमाह ॥ जयी जयनजीलो ज

गऊनकाऊगल्लितादिऊ॥आदिऊगाऊगदी॥नाऊगदी॥अत्र॥क॥नीलक॥॥
 सदाजिव॥॥नूहमहानाथमहाशय॥॥यंयमस्यत्रत्वात्॥विण्वयक्षयधभानोतावल्ल
 यक्षधत्री॥आलेखदी॥सूर्यरक्षक॥क॥नीलक॥॥मयूत्र॥नीलक॥॥यु॥
 गयुगिर्यमत्र॥॥विकल्पं॥॥वात्रलमिगियदन्वयस्त्वदि॥समस्तजापुत्र
 त्वमाह॥विकल्पं॥किंयदं॥क॥कथितं॥वा॥॥गियदं॥संयमसंयमत्रयदं॥किं
 द॥कथय॥त्रलं॥संयमं॥निषध॥युनिषध॥ननूह॥कि॥वात्रलं॥निवात्रलं॥वीभं॥व

२१

ली॥त्रलमयसंयमाय॥संयमतिमिरं॥दिर्ग॥उचिर्ग॥कं॥वकि॥कं॥रतनि॥वात्रलं॥ग
 ऊ॥॥वात्रलं॥युनिषध॥॥वात्रलं॥युमर्ग॥गऊ॥॥विश्व॥॥॥निषधं॥॥माद्यं॥
 यूपुत्रयदन्वयस्त्वदि॥समस्तजागित्वमाह॥निषध॥युनिषध॥किं॥मा॥अमानाता
 युनिषध॥॥दत्रद्विष्णु॥॥श्री॥राश्याका॥मा॥लक्ष्मी॥॥नूहद्यष्टवाद्याद्यष्टाशय॥का
 यद॥द्य॥द्यष्ट॥॥द्य॥द्यष्ट॥यसमाख्यागति॥का॥क॥का॥॥जिगुयात्तवध॥का
 य॥क॥॥माद्य॥॥माद्यकाद्य॥॥नूहजीगृन्जीगदायका॥मा॥क॥॥माद्या॥माद्य

मासशास्त्रीतत्त्वमाद्य ॥ ॥ कस्मिन्निति ॥ विरावसूत्रित्युक्तप्रयदनवक्रद्विष्ट
 मस्तुजातित्वमाह ॥ नूदं शुधीश्वराः ॥ धिताथ ॥ कस्मिन्स्योगं कृत्वावत ॥ विरो
 यते ॥ नूदं यालको आजीवदायक ॥ कावत ॥ क ॥ स्योगं ॥ अस्तु ॥ याल ॥ नूदं दि
 नताथ ॥ सूर्य ॥ कावृहि ॥ विरावसू ॥ सूर्य ॥ विरावसू ॥ नूदं यतिनित्यमत्र ॥ पुन
 नूदं वेष्मनमाः ॥ नि ॥ क ॥ विरावसू ॥ वृद्धि ॥ विरावसू ॥ नूदं यतिनित्यमत्र ॥ ॥
 उयसू ॥ नूति ॥ विश्वानत्र ॥ नूति यदनवक्रसमस्तुजात्युक्तप्रयमाह ॥ उयसू ॥ नूय

२२

दं किं स्यात् ॥ वि ॥ नूदं यून ॥ सात्रमेय ॥ श्व ॥ क ॥ श्व ॥ कोलं यक ॥ सात्रमेय ॥ नूति
 धनं जय ॥ नूदं निषधं किं ॥ न ॥ वृद्धि ॥ अग्नि ॥ क ॥ र ॥ वृद्धि ॥ नूयून ॥ वृद्धि ॥ या
 वकस्य विगाजनक ॥ कावद ॥ विश्वानत्र ॥ विश्वानत्रनामाद्विज ॥ ॥ यूजायामिति
 ॥ समनमृगियदनवक्रद्विष्ट ॥ समस्तुजात्युक्तप्रयमाह ॥ ॥ क ॥ द्वयतय ॥ नूति
 ॥ यूजायामिति यदं वृद्धि ॥ सू ॥ उ ॥ वृद्धि ॥ सू ॥ य ॥ स ॥ न ॥ विस्मादित्यवयकाय ॥ नूदं
 ॥ क ॥ र ॥ स्या ॥ कानं किं ॥ ह ॥ म ॥ ह ॥ नूद ॥ निषधं क ॥ र ॥ ल ॥ नि ॥ वा ॥ र ॥ ल ॥ किं ॥ स्या ॥ न ॥ न ॥ नूदं

जात्युत्तरत्वमाह॥ नृहंसखउचसर्ग४ युयरायसमित्यादिषूयाक्युयाग४क४
। वि. वि. उयसर्ग४॥ ननृहंसखउच४ उंकार४कावदे। उं. उंकार४॥ निष. ध. युतिष
। धयदं किंयुकिं. किंकथिती। अ. अकार४॥ यून४हंसखगगनं. आकाशं कि. किता
। अर्थ४॥ अ. म. आकाशं॥ ॥ मायुत्रिणि॥ माधवाधरजातलूतियदनदीताक
। नजात्युत्तरत्वमाह॥ माउऊनन्याजूरिमुखकत्र. समुखकत्र. ल. किंस्याइयत
। मात४हंसजननि॥ नृहंस. ता. नत्र४कनविरुवान्. धनवान्। यत४धनन. सच्चै

विराकि ४ क ४ ग ४ ॥ अ ४ य ४ अ ४ य ४ न ४ अ ४ य ४ त ४ क ४ अ ४ य ४
ग ४ त ४ का ४ त्री ४ क ४ वा ४ ग ४ य ४ व ४ न ४ ॥ नू ४ रु ४ वि ४ अ ४ रि ४ मू ४ ख ४ व ४ क्रा ४ म ४ न् ४ ल ४ कि ४ र ४ ध ४ ग ४ ४ व ४
क्र ४ न् ॥ न ४ नू ४ रु ४ म ४ ह ४ न् ४ म ४ ह ४ ल ४ आ ४ री ४ ता ४ रा ४ य ४ क ४ स्मा ४ द्द ४ ॥ त ४ ग ४ य ४ व ४ का ४ त् ॥ उ ४ इ ४ व ४ उ ४ ल्य
क् ४ क ४ व ४ वी ४ वि ४ ऊ ४ ग ४ उ ४ ल्य ४ न ४ ॥ भा ४ दा ४ य ४ भा ४ द ४ य ४ द ४ या ४ य ४ यू ४ रू ४ ष ४ का ४ रा ४ व
नि ॥ मा ४ ध ४ वा ४ ध ४ त्र ४ जा ४ त ४ मा ४ ध ४ वा ४ वि ४ षू ४ स ४ ए ४ वा ४ ध ४ त्र ४ आ ४ य ४ सु ४ त ४ जा ४ ता ४ ज ४ नि ४ त ४ स
ए ४ व ४ भा ४ द ४ या ४ धा ४ नी ४ ति ४ या ४ व ४ ॥ ॥ आ ४ म ४ न् ४ ल ४ मि ४ णा ४ दि ४ स ४ य ४ श्म ४ के ४ य ४ ग्ना ४ त्व ४ क ४ त्र ४ ल ४ ग्

॥ वनवास कर मयस्वीनियतनसर्वता राडजा ल्युनरत्वमाह ॥ वनूलास्यामनुलय
 दकिं वद। हव. हव वनूला ॥ नैषध कनिषध राधे. नूह किं वद। त. तकात्र ॥ ननु
 ह. विकल्प. किं। वा. वाक्य ॥ नूह. कृषितस्य. कापिजनस्य. चयून द्विध ॥ वृक्षल
 ॥ संवाधने किं स्यात्। हस. हकाय। वि. धो. हक. हवृक्षन ॥ नूह. वक्रिगति ॥ क ॥
 ॥ अग्नि ॥ नूह. गहनाशिमुख. वनाशिमुख. किं वद। हवन. हविचिन ॥ चयून
 ॥ ह्यस्य वसंत रशिमुख. ॥ शिमुख. किं वद। हवास. हवसंत ॥ नूह. द ॥ दाट

२७

शील ॥ क ॥ कर ॥ यालि ॥ नूह. (ग्र ॥ क ॥ व ॥ ॥ ग्र ॥ ॥ नूह मनूजा मनुष्य ॥ क
 वद। नना मनुष्य ॥ दिन दिवस ॥ क ॥ वा ॥ वास ॥ नूह सख. गमन गतो. क ॥ स्या
 त्। स ॥ गमन ॥ ह गतो धत्व नूसात्रात् ॥ ह सख. किरल ॥ क ॥ कर ॥ किरल ॥
 ह सख. नद. (ल. याल न. किं। अ. नद. के ॥ ग्रह सखाका ॥ नवग्रह गलना ॥ किं
 नव। नव संख्या ॥ यायस्याशिमुख. सीमुख. उयून ॥ किं। ह अक. हयाय ॥ अ क या
 थ व इष्व वे नि वि श्व ॥ नूह नव ॥ ह्यस्य सून ॥ यूय ॥ क ॥ आ ॥ गने श्र ॥ आ

२४

गैत्यर्थः। प्रादानं भूतिश्च तूमात्रात् ॥ अटवीकरः काननकारी नूदः कः। वन
करः वननिर्माणाकारी ॥ यमुस्य नूदः ॥ रिमुखः समुखः किं। हवसनः हवसु ॥ नू
दः कात्रः कर्त्तृकः। करः कृतः। कर्त्तातीति कात्रः ॥ नूदलं कायूरी यदहनदाहक
त्रः कः। बानत्रः। हनूमानिति यावत् ॥ मयस्य सूत्रायाः नूदः सखः अरिमुखः किं
स्यात्। हं अस्वः हं मयः ॥ न नूदः त्रयितद्विजातः स्नानकृतद्विजस्य निरंशः। नि
रंशो यः संपाद्यते किं। हं सवनः। वनं न जलं न सहवर्त्तते भूतिः सवनः। हं सवनः।

15
 10
 ५
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

सत्रप्रदितः॥ दियतः गयस्त्रीयतिः कीटकः कीटः॥ वनवासकः वनवासीयः
 नेयस्तु ॐ एथः॥ उतयत्वा त्रिंशत्सु कात्रोत्तरकथनात्सर्वतोऽपु ॐ तिष्ठन्मी॥
 आकाशं ॐ ति॥ कवीनरं ॐ तियदतयस्मदीयमाता दत्रदिव्यस्ममस्मजात्युः
 रुतत्वमाह॥ हंसखसविशुः सूर्यस्याकाशे किंरवति॥ हंकः हंरास्केत्राकावम् २८
 लिममीनात्स यमदंकेषु रास्केत्रं ॐ तिभदिनीकेत्रः॥ काकादनाली सूर्यालाम
 (ॐ) राक्षको नृहः को॥ वा यकि (लो) अथाद्गूजमयूराविति रावः॥ गूरयाञ्च ३४

शुवाः काकादत्रः रुली एमत्रः॥ तनूहं तस्क तस्योत्रस्य संवृद्धो किं वदाहं तः हं
 सीत्रा तकात्रः कथं गयोत्रः ॐ एकादशकोषः॥ अग्निः कः॥ त्रः अग्निः॥ नृथेर्दूथे
 अंहा गृहली कः॥ कत्रः त्राऊय हेलधर्त॥ बलवान् बल युक्तालाकाऊनः कः॥ वी
 त्रः वली॥ नदीनरालवाक् नदीयात्त गवचर्तः कः॥ स्यात्सखत्वं वद॥ तत्र उरुत्र
 लः॥ नाम नृष्य आसी अः विष्णुः श्रुतिवः॥ तत्र नृय विष्णुः॥ राम नृय कृष्ण नृय मूर्तिः॥
 तथा देवकथाया दिव्यकथायाः रामायणं हविर्वंश कथायाः उदिगो उदयकृगो

थारवतीतिरावशा नृत्तमनूयात्तंजिना नृद ४ चिकुर ४ क ४ कंश ४ चिकुर ४ ययु
 न ४ कायकाय यद किं वद ॥ वी काय ४ वी इवरावन काय वृतिविश्व ४ ॥ यथा
 विंशत्युत्तरं लसर्वता रुड वृति ॥ ॥ कास्यादिति ॥ वालागामतिथयदन वसुधिव्य
 रुसमरुजात्युत्तरत्वमाह ॥ नृद ४ थ ४ उ ग हायनी वनिताम्नी कास्यात् ॥ वाला
 युवति ४ वाला थ ४ उ ग हायनी तिकाय ४ ॥ महासुन्दरी कास्यात् ॥ रामो सुन्दरी
 ॥ सुन्दरी रामली रामस्य मत्र ४ ॥ हंसखगतिगन्ध ४ ॥ गमन गंधे थ ४ इति ४ काव

३४

दावा वागतिगन्ध तथाप्रतिष्ठाता ४ ॥ नृद ययुन ४ गु ४ उ यादान थ ४ उ ४ क ४
 ॥ ला ला आदान वृतिष्ठाता ४ ॥ ला दान ग्युयु कीर्ति त वृत्त्य का द न काय ४ ॥ हंस
 खे दान थ ४ ४ ॥ लिर्त का र व नि । रा दान । रा दान थ ४ ॥ नृद थ ४ उ म्मानि का
 यद । मा मा द मान थ ४ ॥ न नृद कर्म थ ४ य य द कर्म थ ४ य स मा स मुका
 स्यात् त्वे सर्व वित् सर्व क्लादिनिश्चय न वृद्धि ॥ वालागामा । वाला वा सो रामा यति
 वालागामा । थ ४ उ ग हायनी सुन्दरी ॥ ॥ यृक्तगीति ॥ सात्रसाधन्य ४ वृत्ति यदन

शब्दार्थलिङ्गवचनरिन्नत्वमाह ॥ सात्रावय ४ सात्रसातयद्विरादात्त. पृच्छति। य
 श्चैकमिति। तथैवसात्रसा ४ यद्विरादात्त ४ सात्रावय ४ यद्विरादात्त। किं पृच्छति। तथैवसात्रसा
 यथायथावय ४ सात्रावय ४ नूनंकार्यवय ४ कार्यकारित्व ४ म्रिय ४ म्रियता ४ का
 ४ ॐतिवत्त ४ पृच्छति। सात्र. हंसात्र. हं वत्त. साधन्य ४ साधनकारित्व ४ अथाह
 हंकार्यादिसाधनकारित्व ४ ॐत्यर्थ ४ ॥ वयून ४ लार्क. शुवनंयुगलवाक्. उ
 क्तैरवयवर्तक ४ ॐतियद्विरादात्त ४ पृच्छति। हंसात्रसा ४ हंयद्विरादात्त ४ धन्य ४ धन्य

३५

यदमिति ॥ सात्रसा ४ ॐतिशब्दरिन्नत्वम्। साधन्य ४ धन्य ४ ॐतिलिङ्गरिन्नत्वम् ॥ म
 ही नूनमिति ॥ यादयसाव ४ ॐतियद्वनसंवाधनात्तत्त्वंतज्जदार्थवचनरिन्न
 त्वमाह ॥ याद ४ किरल ४ मही नूनं. वृक्षं पृच्छति ॥ यून ४ मही नूनं वृक्षं नूनंयाद
 किरलंभवयपृच्छति। ननूनं. एतन्तिराका ४ कववाचि। हंयाद. हं किरल. यज
 वाममदय ४ ॥ सात्रवृक्ष. हंममन. अजीवदहाजीवप्रतिगतात्री ४ क ४ वद
 । हंयादय. हं वृक्ष. जवामनक ४ ॥ यादय. (पुत्रीयां. (जेलययनयवर्तक

॥ यत्र लज्जमयूरवर्षातिविश्वशा ॥ यूरीति ॥ युष्माकं राजातिल्वमाह ॥ दशकन्ध
 न्नरुद्रसु ४ रावलागदसम्पा ॥ लं अर्थ ॥ हम्ममयो. सुवर्लूमयीयूरीतगरी
 का ॥ अर्थ ॥ वा रु री ॥ लं का. लं का नाम यूरी ॥ नूनं निश्चयं. अग्निदधिलं. अल्प
 नाशिमानिर्नकी ॥ की दधिलं. अर्थ ॥ लं दधिलं ॥ क ४ कलं. अथ कयाति. या
 प्राति ॥ कलं का. लं कनं. ग्मा मवर्लुत्वा ग कलं का ॥ अकभेवतिराव ४ ॥ कलं शु
 क कला ॥ जो ॥ लं. अथ क मयूरधना विनिविश्वशा ॥ ॥ अदप्रति ॥ मययुष्माकं

३४

वली सूरी लं यलुगानां मुख. लग्नात्. लग्नीरुयात् ॥ क वसू ॥ धेव. अमृतामिवास्तु
 ग्रीलं की दृष्टानां. अदप्रयक व कुलं. अदप्रलशुद्धा दप्रल अकं सुट्टं वकुं मूरु
 यवर्ग. गवर्ग ॥ यून ४ की दृष्टानां. मना रुमतसां. सुद दयानाम् ॥ मुखनेवामृता
 यार्त राविश्वगानिधनिशा ॥ अगुसग्नं न आशिषमाह ॥ अशिलाषं ॥ यस्मा
 जनस्य यत्नग ४ उग्रमात्. गस्यायुष्माकं वावल्यां अशिलाषं ॥ का वलं ग. गम्
 जनाय सामाता जननी सुनस्यता विद्याथं द्यादिदातु. विद्या. शा मु विद्या व अर्थ

उच्यते विद्या (थो) ताया माया न युष्मन्त ददातु दिशतु । यद्वा विद्यार्थमाया न ज्ञानमु
ज्ञकार्थयुष्मन्त ददाति ॥ ॥ सा त्रयति ॥ सा त्रयदा स त्रयत्वा सर्वदानि र्थमाया तु त्र
कतु । कीदृशी सर्वदा सर्वे अथ मिता वा किं त सर्वे ददातीति सर्वदा ॥ ॥ ॐ निशा गी म ३१
धनं गम्यन् विप्रचितो गङ्गाधरी टीका समाप्ता ॥ ॥ गुरु ममु सर्वलोकानां ॥
१२ मन्त्र २३ रा उ य द मा स गु क्त य द्वा प्र गिय लि (थो) वृध वा त्र त सि नि
न स्र नि क्त व का गृह नि वा सि भा वि प्र कु ला रु व ४ गी ग ल य ति ग म्म ल ४ यू य

४ गी द व ज क्त त्र ग म्म मू गङ्गाधरी टीका मली लिखतु ॥ ॥ गुरु म् ॥ ॥

5

३८

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

5

10

15

20